महिला को अंग्रेजी में women कहते हैं। इन पाँच अक्षरों में नारी के महत्वपूर्ण गुण समाहित हैं।

W	O	M	E	N
Will Power	Oneness	Might	Enlightment	Nobility
मनोबल	**एक ही लगन में मगन**	**शक्ति**	**दिव्यता**	**उदारता**
विश्व इतिहास में ऐसे अनेक मिसाल हैं जब नारियों ने अपने दृढ़ मनोबल द्वारा कठिन परिस्थितियों में विजय प्राप्त की। इसी मनोबल को बढ़ाने वाली सिर्फ और सिर्फ नारी ही है। जिसका चेहरा हम अपनी माँ के अंदर देख सकते हैं।	जहाँ भी मनुष्य की लगन लग जाती है, वहाँ उसे सफलता प्राप्त हो जाती है। फिर चाहे वह राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक या आध्यात्मिक कोई भी क्षेत्र हो। मीरा ने एक कृष्ण से लगन लगाकर, कृष्ण के दिल में समाकर उच्च स्थिति को प्राप्त किया।	जब आत्मा की आन्तरिक शक्तियां जागृत हो जाती हैं तो नारी अबला नहीं, शक्ति स्वरूपा बन जाती है। शिव शक्ति, दुर्गा, काली, अम्बा बनकर वह विश्व से दुर्गुणों एवं बुराइयों का विनाश करने के महान कार्य में सहयोगी बन जाती है। शक्ति स्वरूपा नारी ही उद्धारक है।	ज्ञान के प्रकाश द्वारा स्वाभाविक गुणों स्नेह, त्याग, सहनशीलता, करुणा आदि में दिव्यता आ जाती है, जिससे फिर नारी साधारण नारी न रह, सबकी मनोकामना पूर्ण करने वाली जगदम्बा बन जाती है। जिसे फिर कामधेनु भी कहते हैं।	माँ का हृदय भी उदार, विशाल होता है। अपने इस गुण से वह परिवार के सभी सदस्यों की कमियों को समाकर और उन्हें आगे के लिए सही रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित कर पूरे परिवार को एक सूत्र में बांधे रखती है। ये उसकी ही महानता है।

परमात्म नूर से सशक्त गरिमामयी नारी

समाज का उसूल रहा है कि वह सम्मान सभी को तुरन्त नहीं देता, काफी समय लगाता, जब तक वह उसे अच्छी तरह से ना परख ले। आज बहुत सारे समाज सेवक हुए हैं। जिसमें फ्लोरेंस नाइटिंगेल, सरोजिनी नायडू या फिर मदर टेरेसा, इन्हें भी समाज ने एक दिन में सहज स्वीकार नहीं किया। इन्हें भी अपने आपको समाज के आगे दिखाना पड़ा कि हम नारी हैं, लेकिन कमज़ोर नहीं हैं। समाज के हर पैरामीटर को उन्होंने पार किया। इन लोगों ने समाज सेवा की, लेकिन वह भी एक बात तक सीमित रही। परन्तु जीवन के हर पहलू को छूना, शायद इनकी पहुंच से बाहर रहा।

शायद इसी को ध्यान में रखते हुए परमात्मा ने ऐसी शक्ति स्वरूपाओं को रचा, जो मानसिक रूप से सशक्त हैं। उन्होंने प्रजापिता ब्रह्मा के मुख से कहा कि यही नारियां ही जगत उद्धारक हैं, इन्हीं के द्वारा ही स्वर्ग स्थापन होगा, यही स्वर्ग बनायेंगी। परमात्मा की गोद में, ईश्वरीय पालना में इन शक्तियों को14 साल तक ज़बरदस्त तरीके से तैयार किया गया। इन्होंने जब संसार में कदम रखा तो इनका देहाभिमान टूट चुका था। इनको याद रहा तो सिर्फ एक कि मैं शक्ति स्वरूपा हूँ, आत्मा हूँ और इसी भान ने उनके स्त्री-पुरूष के भेद को मिटाने में मदद की। ब्रह्माकुमारी संस्था नारी सशक्तिकरण का ज्वलंत उदाहरण है। इन्हें सशक्त बनाया स्वयं परमात्मा शिव ने। इतनी विशाल संस्था, वह भी महिलाओं द्वारा संचालित। संसार में यादगार ऐसे ही नहीं बना होगा, ज़रूर समाज के हर वर्ग को उठाने में इन्होंने बहुत मदद की। आपको इस संस्था की पहली महिला प्रशासक, जिनके हाथ में परमात्मा ने ब्रह्मा द्वारा बागडोर दिलवाई, वह जगदम्बा सरस्वती, जिन्होंने सिर्फ परमात्मा को माना, उन्हीं को फॉलो किया। उम्र छोटी, लेकिन कर्म में महानता के कारण उनको सभी ने जगतमाता के टाइटल से नवाज़ा।

ट्रस्टी के रूप में तथा निमित्त प्रशासिका का इस संस्था को एक ऐसा अनमोल उपहार

दादी प्रकाशमणि जी के रूप में मिला, जिन्होंने समाज के हर वर्ग को, सम्मान और प्यार दिया।

संस्था को बढ़ाने में अभूतपूर्व योगदान तथा आमूलचूल परिवर्तन समाज के अन्दर लाया। आज संस्था अगर 140 से अधिक देशों में विकसित हुई तो उसका श्रेय सिर्फ दादी प्रकाशमणि जी को ही जाता है। उसके पश्चात् शतायु दादी जानकी ने कमाल ही कर दिया है, जो प्रकृति पर विजय प्राप्त कर सभी के लिए उदाहरण बन गयी हैं। मानसिक रूप से सशक्त दादी जानकी जी 103 वर्ष की आयु में इतना आवागमन करतीं, देश-विदेश की भरपूर यात्राएं करतीं, समाज को आध्यात्मिक रूप से सशक्त बनाती हैं। जब तक नारी आध्यात्मिक रूप से सशक्त नहीं, तब तक वह सशक्त नहीं है। इस दुनिया में सब कुछ सिर्फ बोलना ही नहीं होता। कुछ चीज़ें बिन बोले ही समझ आ जाती हैं या कही जा सकती हैं। उस कहने और ना कहने के मध्य एक शक्ति कार्य करती है जो सिर्फ परमात्मा से जुड़ के ही चलती है। इन सभी विशेषताओं से परमात्मा को अपने अंदर समा लेने वाली

जब संसार जगा माना हम जगे, तो कहीं ना कहीं उसमें हाथ तो इन शक्ति स्वरूपाओं का ही रहा। इस अनोखे निराले जगत को रचना, उस रचनाकार के लिए भी शायद मुश्किल हो जाए, अगर उन्हें इन सन्नारियों का सम्पूर्ण साथ ना मिले। इनकी विजय गाथा की कहानी कहने में कहीं कलम थक जाए, ऐसी हैं ये जगतजननी, पार्वतियाँ।

और अपनी दृष्टि से सभी को परमात्मा की अनुभूति कराने वाली महान नारी शक्ति का नाम दादी गुल्ज़ार है। उन्होंने अपने जीवन के 95 पड़ाव पार कर लिये, लेकिन आज तक सिर्फ नपे-तुले शब्दों से ही काम चलाया। उनके इस भाव से इस शक्ति का पता चलता है कि संकल्प को कैसे इकट्ठा किया जाये। उनके सामने बैठते ही हमारे संकल्प ठहर जाते, हमारे भाव कहते कि बस अब ऐसे ही रहो। ऐसी सशक्त दैदीप्यमान महिला का ज्वलंत उदारहण दादी गल्ज़ार हैं। ऐसी महान शक्तियों के आधार से भारत का एक नया इतिहास लिखा जा रहा है, और वो इतिहास होगा स्वर्गिक, स्वर्णिम दुनिया का। वो सिर्फ यही सन्नारियां रच सकती हैं। आज सभी डर में जी रहे हैं क्योंकि धन सभी के पास, उन्हें सब कुछ दिया तो जा रहा है, लेकिन शक्ति आत्मिक रूप से ही आती है। असली सशक्तिकरण तो सिर्फ यहाँ है, जिन्होंने आज जो किया है, वही बाद में उनकी आरती व वन्दना गाकर हम गुणगान करते हैं। वाह परमात्मा, और वाह उनकी शक्तियां, कमाल!!!

हांसी-हरियाणा। 'शांति सरोवर के उद्घाटन एवं प्रभु समर्पण समारोह' के अवसर पर संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी से ब्लेसिंग्स लेते हुए ईश्वरीय सेवार्थ समर्पित होने वाली कन्यायें। साथ हैं ब्र.कु. अमीरचंद, ब्र.कु. प्रेम बहन, ब्र.कु. लक्ष्मी बहन, ब्र.कु. हंसा बहन तथा अन्य ब्र.कु. भाई बहनें। कार्यक्रम में शरीक हुए भाजपा युवा नेता अजय सिंधु, लेफ्टिनेंट जनरल डी.पी. वत्स, पुलिस अधीक्षक वीरेन्द्र विज तथा अन्य गणमान्य लोग।

गुवाहाटी-असम। जस्टिस रंजन गोगोई तथा श्रीमति गोगोई,चीफ जस्टिस,सुप्रीम कोर्ट ऑफ इंडिया का स्वागत करते ब्र.कु. भारत भूषण तथा ब्र.कु. कविता।

अमरावती-महा.। 'मेरा भाग्य कौन लिखता है' विषय पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा ब्र.कु. शिवानी, क्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. सीता, ब्र.कु. इंद्रा, सांसद आनंदराव अडसुल, लष्मीभैया जाजोदिया, सौ. नवनीत राणा, विवेक मराठे,दैनिक हिन्दुस्तान, कमल ताई गवई, सोनाली ताई देशमुख, अनिल अग्रवाल,दैनिक अमरावती मंडळ तथा अन्य गणमान्य लोग।

सूरत-मजूरागेट। वीर नर्मद साउथ गुजरात युनिवर्सिटी के रूरल स्टडीज़ एंड इकोनॉमिक्स डिपार्टमेंट तथा ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा युनिवर्सिटी के समाज विज्ञान भवन में आयोजित 'शाश्वत यौगिक खेती' सेमिनार के पश्चात् उपकुलपति शिवेन्द्र गुप्ता को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्रह्माकुमारीज़ ग्राम विकास प्रभाग के उपाध्यक्ष ब्र.कु. राजू,माउण्ट आबू तथा सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सोनल।

कोटद्वार-उत्तराखण्ड। ब्रह्माबाबा के 50वें स्मृति दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में नगर की मेयर हेमलता नेगी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. ज्योति तथा ब्र.कु. दीपा। साथ हैं उत्तराखण्ड के पूर्व स्वास्थ्य मंत्री सुरेन्द्र सिंह नेगी।